जिज्ञासा

त्वचा क्यों होती है गोरी या काली?

आपने अलग-अलग देशों में रहने वाले लोगों के रंग में अंतर देखा होगा। और तो और हमारे अपने देश में ही अलग-अलग रंगों के लोग रहते हैं। पर क्या आपने कभी सोचा है कि त्वचा का रंग आखिर भिन्न क्यों होता है ?

असल में मनुष्यों, प्राणियों व वनस्पती में विभिन्न प्रजातियों में अंतर उनके समय के साथ बदलते निवास के कारण पैदा हुआ है। वे स्थानीय वातावरण के अनुकूल रहन-सहन एवं भोजन आदि के कारण परिवर्तित होते गए। प्रमुख विभिन्ताओं में शारीरिक संरचना, बाल , त्वचा का रंग एवं चेहरे का आकार प्रमुख है। मानव जाति का विचरण पृथ्वी पर पर अन्य प्राणियों के मुकाबले ज्यादा विस्तृत है। किसी भी व्यक्ति की त्वचा का रंग उसके वातावरण के अनुकूलन को प्रदर्शित करता है। गहरी भूरी अथवा काली त्वचा उन जगह के लिए उपयुक्त है, जहां सूर्य के किरणों की तीव्रता अधिक होती है, क्योंकि इस तरह की त्वचा नुकसानदायक परा बैंगनी किरणों द्वारा कैंसर के खतरे को रोकती हैं। कम चमकीले क्षेत्रों में यह उपाय आवश्य्क नहीं है, बल्कि ऐसे स्थानों पर गहरी रंगत वाली त्वचा में विटामिन डी का निर्माण अवरुद्ध हो सकता है। इसलिय प्रारंभिक मनुष्यों के अफ्रीका से उत्तरी क्षेत्रों की और गमन के साथ ही उनके त्वचीय रंजक समाप्त होते गए एवं वे पीत वर्ण होते गए। ऊष्ण कटिबंधीय देशों में प्रकाश की अधिक्ता के बाद भी गहरी रंगत वाली त्वचा में विटामिन डी का निर्माण होता है। आज लोग जनसामान्य एक स्थान से दूसरे स्थान तक गमन करते रहते हैं एवं विभिन्न जातियों में विवाह के कारण यह विभेद अस्पष्ट होते जा रहे हैं।

चीन में बना दुनिया का सबसे लंबा पुल

बेहतरीन और बेजोड़ तकनीक की मिसाल बनते जा रहे चीन ने एक बार फिर अपने दृढ़ इरादों से सपनों को हकीकत में बदल दिया है। चीन ने यहां बने दुनिया के सबसे लंबे समुद्री पुल को जनता के लिए खोल दिया। चीन के किंगडाओ शहर में बना दुनिया का सबसे लंबा पुल यातायात के लिए खोल दिया गया है। आठ मार्गों वाले इस समुद्री पुल की लंबाई 42.4 किलोमीटर है। दुनिया के सबसे लंबे पुल को बनाने में तकरीबन 4 साल का वक्त लगा। चीन की सरकारी मीडिया के मुताबिक इसे बनाने में 10 अरब युआन (यानी 1.55 अरब डॉलर) खर्च हुए हैं। इस पुल को 5,200 खंभों पर खड़ा किया गया है।

पहला डाक टिकट

डाक टिकट जारी करने वाला दुनिया का सबसे पहला देश था- ग्रेट ब्रिटेन। 1 मई 1840 को ब्रिटेन में पहली डाक टिकट जारी की गई। इसके बाद दुनिया के अन्य देशों में भी डाक टिकटें शुरू हो गईं। ब्रिटेन दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जिसकी डाक टिकटों पर उसके देश का नाम अंकित नहीं होता। न्यूजीलैंड की पहली डाक टिकट भी ब्रिटेन में ही डिजाइन की गई थी और 1855 में जारी की गई थी। न्यूजीलैंड द्वारा डिजाइन पहली डाक टिकट 1873 में जारी हुई थी, इस पर भी क्वीन विक्टोरिया का ही चित्र था।

प्यारे बच्चो, जंगल की सैर करना अपने आप में बहुत अनोखा और रोचक अनुभव है। हमारे देश में जंगलों की सैर करने से विदेशों से कई पर्यटक आते हैं। आइए अपने देश के जंगलों को जानें...

जंगल की सैर

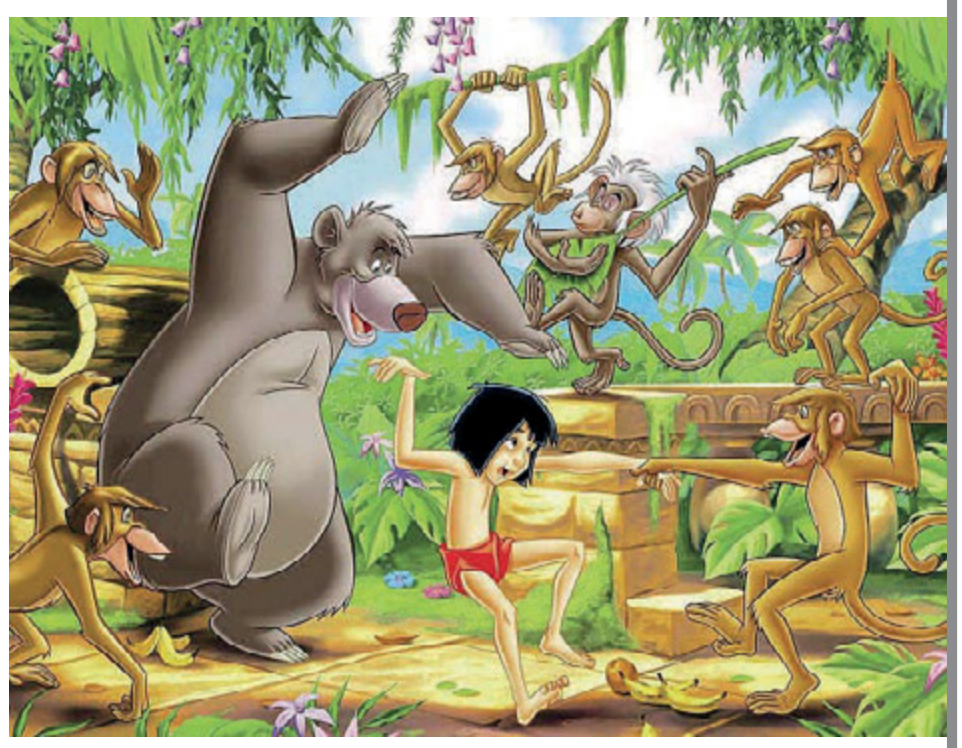

बच्चो, वृक्षों और वन्य प्राणियों से भरे जंगल के बारे में सोचना अपने आप में बहुत रोमांचक है। कल्पना करें, आप बहुत बड़े जंगल में वृक्षों और प्रकृतिक नजारों के बीच घिरे हैं, तो कितना मजा आए। भले ही ऐसे में जंगली जानवरों के हमले का डर रहता है, परंतु जंगल की सुरक्षात्मक तरीके से सैर करना अपने आप में बहुत रौचक है। आइए आज जंगल और वन्य प्राणियों के बारे में कुछ बातें करें।

वन्य जीवन प्रकृति की अमूल्य देन है। भविष्य में वन्य प्राणियों की समाप्ति की आशंका के कारण भारत में सर्वप्रथम 7 जुलाई, 1955 को वन्य प्राणी दिवस मनाया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष दो अक्तूबर से पूरा हङ्कता वन्य प्राणी सप्ताह मनाया जाएगा। वर्ष 1956 से वन्य प्राणी सप्ताह मनाया जा रहा है। भारत के संरक्षण कार्यक्रम की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक मजबूत संस्थागत ढांचे की रचना की गई है।

जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, बोटैनिकल सर्वे आफ इंडिया जैसी प्रमुख संस्थाओं तथा भारतीय वन्य जीवन संस्थान, भारतीय वन्य अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वन अकादमी तथा सलीम अली स्कूल ऑफ आरिन्थोलॉजी जैसे संस्थान वन्य जीवन संबंधी शिक्षा और अनुसंधान कार्य में लगे हैं। भारत कई प्रकार के जंगलों, जीवों का, अनेक पेड़ पौधों और पशु-पक्षियों का घर है। शानदार हाथी, मोर का नाच, ऊंट की सैर, शेरों की दहाड़ सभी अनोखे अनुभव हैं। यहां के पशु पक्षियों को अपने प्राकृतिक निवासस्थान में देखना आनन्दायक है। भारत में जंगली जीवों को देखने के लिए कई देशों से पर्यटक आते हैं। यहां जंगली जीवों की बहुत बड़ी संख्या है। भारत में 70 से अधिक राष्ट्रीय उद्यान और 400 जंगली जीवों के अभयारण्य है और पक्षी अभयारण्य भी हैं। प्रकृति प्रेमियों के लिए यह जंगल स्वर्ग है परन्तु अब यहां के कुछ जीव जैसे चीते, शेर, हाथी, बंगाल के शेर और साइबेरियन सारस अब खतरे में हैं। भारत की लम्बाई और चौडाई में फैला यह जंगली क्षेत्र रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान से हजारी बाघ जंगली जीव अभयारण्य, बिहार से, हिमालय के जिम कोर्बेट राष्ट्रीय उद्यान, अन्डमान के छह राष्ट्रीय उद्यानों तक एक शानदार जंगल की सैर कर सकते हैं। हाथी, चीते, जंगली भैंसा, याक, हिरन, जंगली गधे एक सींग वाला गैंड़ा, साही, हिम चीते आदि जंतु हिमालय में देखने को मिलते हैं। भारत में विश्व के अस्सी प्रतिशत एक सींग वाले गैंड़ों का निवास है। काजीरंगा खेल अभयारण्य गैंड़ों के लिए उपयुक्त निवास है और प्राकृतिक संस्थाओं के लिए और जंगली सैर करने वालों के लिए भी

- संसार में पौधों की 2,50,000 ज्ञात प्रजातियों में से 15,000 प्रजातियां भारत में मिलती हैं।
- संसार में जीव-जन्तुओं की कुल 15 लाख प्रजातियों में से 75,000 प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं।
- भारत में पक्षियों की 1,200 प्रजातियां और 900 उपप्रजातियां पाई जाती हैं।
- भारत के सुविख्यात पक्षियों में बहुरंगी राष्ट्रीय पक्षी मोर उल्लेखनीय है।
- पांच फुट की ऊंचाई वाला भव्य सारस तथा संसार का दूसरा सबसे भारी पक्षी हुकना (सोहनचिड़िया) महत्वपूर्ण पक्षी है।
- संसार में प्रसिद्ध केवलादेव (भरतपुर) के राष्ट्रीय उद्यान में ढाई लाख पक्षियों का घर है।

अच्छी जगह है। भारत के सोन चिड़िया और ब्लैक बक, करेश अभयारण्य में होते हैं। माधव राष्ट्रीय उद्यान में, जो शिवपुरी राष्ट्रीय उद्यान कहलाता था, जीवों का एक निवास है। कोर्बोट राष्ट्रीय उद्यान सबसे प्रसिद्ध है। उत्तर भारत में जंगली जानवरों के पर्यटकों के लिए अच्छी जगह है। ऐसे अभयारण्य और राष्ट्रीय उद्यान, भारत में काफी संख्या में हैं। भारत में शेरों (बाघ) की संख्या बहुत थी। भारत का राष्ट्रीय पशु, शेर, तेजी और ताकत का चिन्ह है। भारत में बारह बाघ निवास है। शाही बंगाल के बाघ, सबसे शानदार जाति के पशुओं में से हैं। विश्व के साठ प्रतिशत शेरों की संख्या भारत में रही है। मध्य प्रदेश, शेरों के निवास की सबसे प्रसिद्ध जगह है। जंगली जीवों के साथ-साथ हमारे देश में पक्षियों की भी संख्या अच्छी है।

किस्से

रानी की उबासी का हल ढूंढा तेनालीराम ने रानी की उबासी

एक दिन तेनाली राम को संदेश मिला कि रानी तिरुमलादेवी बड़ी मुसीबत में हैं और उनसे मिलना चाहती है। वह रानी के पास पहुंचा। उसे पता चला कि एक दिन राजा कृष्णदेव राय रानी को अपना लिखा नाटक सुना रहे थे कि रानी को उबासी आ गई। राजा ऐसे नाराज हुए कि उसी समय उठकर चले गए और तब से कई दिन हो गए हैं, इस ओर नहीं आए। रानी ने कहा, 'इसमें मेरा कोई दोष नहीं था। मैंने क्षमा मांगी, पर कोई असर नहीं हुआ। तेनाली राम तुम्हीं अब इस समस्या को सुलझा सकते हो।'

'आप चिन्ता न करें, महारानी, मैं अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करूंगा।' तेनाली राम ने रानी को ढांढस बंधाया।

वहां से तेनाली राम दरबार पहुंचा। राजा अपनी राज्य के किसी क्षेत्र में चावल की स्थिति पर अपने मंत्रियों से सलाह कर रहे थे। 'चावल की उपज बढ़ाना बहुत आवश्यक है। राजा ने कहा, 'हमने अब तक बहुत प्रयत्न किए हैं। इस से लाभ हुआ है, लेकिन अभी समस्या पूरी तरह नहीं सुलझी है।

'महाराज!' तेनाली राम ने चावल के नमूने का एक बीज राजा को दिखाते हुए कहा-'अगर यह बीज बोया जाए, तो उपज इस साल की उपज से तिगुनी होगी।' यह तो बहुत अच्छा होगा, लेकिन इसके लिए शायद विशेष तरह की भूमि और खाद की आवश्यकता होगी। राजा ने कहा। नहीं, महाराज, इसके लिए केवल इतना आवश्यक है कि इसे बोने, सींचने और काटने वाला व्यक्ति ऐसा हो, जिसे न कभी उबासी आई हो और न कभी आएगी।' तेनाली राम बोला।

'तुम्हारे जैसा मूर्ख मैंने कभी नहीं देखा, 'राजा ने कहा, 'क्या संसार में ऐसा कोई व्यक्ति है, जिसे कभी उबासी न आई हो?' 'मैं तो भूल ही गया था। सचमुच मैं बहुत मूर्ख हूं।' तेनाली राम बोला, 'अच्छा हुआ कि महाराज को यह बात याद आ गई। मैं अभी जाकर महारानी तिरुमलादेवी को अपनी इस मूर्खता के बारे में बताता हूं।' नहीं, नहीं, मैं स्वयं जाकर उन्हें बता दूंगा। राजा ने कहा। दरबार में हंसी का फव्वारा छूट पड़ा। दरबार के बाद महाराज रानी के महल में गए। दोनों में सुलह हो गई। राजा ने तेनालीराम को सोने की एक थैली भेंट की, रानी ने भी तेनालीराम को बहुमूल्य उपहार दिए।

रास्ता ढूंढो

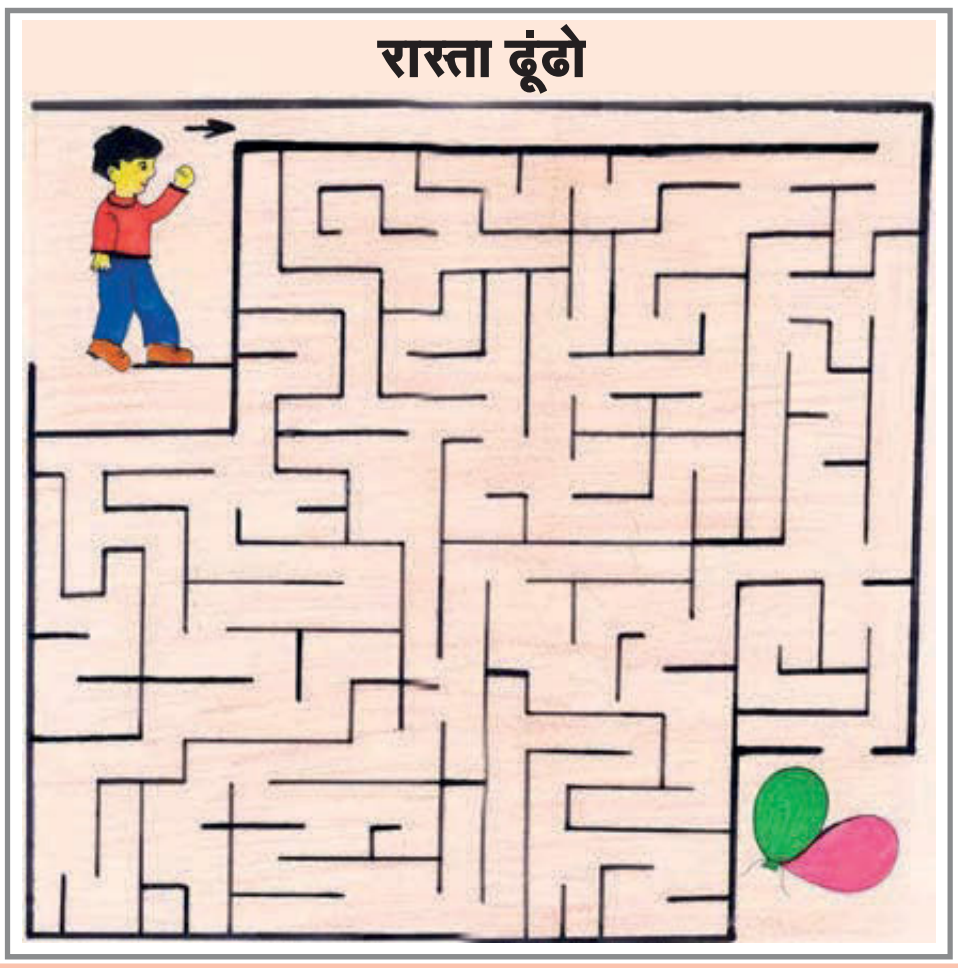

लोक-कथा

घोड़े ने जताई और सुंदर बनने की चाह

एक समय की बात है। भगवान के पास एक घोड़ा था जो बहुत ही हष्ट-पुष्ट और सुंदर था। वह भगवान का चहेता भी था। इसके बावजूद भी घोड़ा संतुष्ट नहीं था। वह और सुंदर बनना चाहता था।

एक दिन घोड़े ने भगवान से कहा- हे प्रभु! आपने मुझे बहुत सुंदर बनाया, अपना स्नेह दिया। लेकिन अब मेरी इच्छा है कि आप मुझे और सुंदर बना दें। तो मैं आपका और आभार मानूंगा। भगवान ने जवाब दिया- मैं तुम्हें और सुंदर बनाने को तैयार हूं। बताओ तुम क्या बदलाव चाहते हो अपने में।

घोड़े ने कहा कि मेरा शरीर पूरी तरह से संतुलित नहीं है। मेरी गरदन बहुत छोटी है। हो सके तो मेरी गरदन को थोड़ा लम्बा कर दें। ताकि मेरे शरीर का ऊपरी हिस्सा सुंदर बन जाएं। इसके साथ ही पैरों को थोड़ा और लम्बा व पतला बना दें ताकि शरीर का निचला हिस्सा भी सुंदर बन जाए। भगवान ने कहा तथास्तु!

अचानक घोड़ा ऊंट जैसा दिखने लगा। यह देखकर घोड़ा चौंक गया और रोने लगा-हे भगवान मैं तो और सुंदर बनना चाहता था ये आपने क्या किया? भगवान ने कहा कि तुम अब ऊंट बन गए हो यही तो तुम चाहते थे।

घोड़ा रोने लगा नहीं मैं ऊंट नहीं बनना चाहता। मैं तो घोड़ा ही बने रहना चाहता हूं। घोड़े के रूप में सभी मुझे पसंद करते हैं लेकिन ऊंट के रूप में कोई नही करेगा।

भगवान ने कहा कि मैंने तुम्हें जितना दिया तुम उसी में संतुष्ट रहना सीखो। तुम्हें ज्यादा पाने की आशा नहीं करनी चाहिए। इससे तुम्हें हर पल और पाने का लालच रहेगा। इसका तुम्हें बुरा परिणाम भी भुगतना पड़ सकता है।

भगवान ने कहा कि दुनिया में मेरी बनाई हुई अहर चीज की अपनी एक लग खूबी है। ऊंट तुम्हारी तरह सुंदर नहीं है। फिर भी उसे अपने रूप से कोई शिकायत नहीं है। वह भारी बोझ उठाता है, उसमें अपनी जिम्मेदारी समझने और उसी में संतुष्ट रहने की क्षमता है।

घोड़े ने गिड़गिड़ाते हुए भगवान से कहा- मैं समझ गया। आप मुझे फिर से घोड़ा बना दें और भगवान ने उसे फिर से घोड़ा बना दिया।

हम बताएं, आप बनाएं

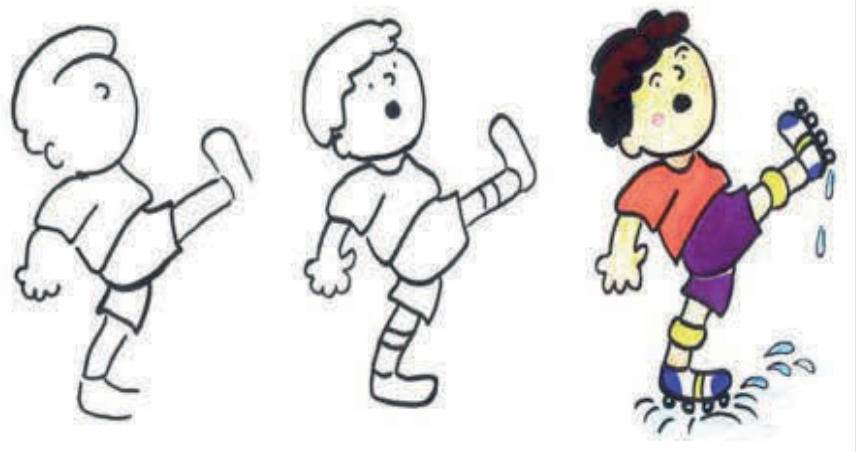

बर्गर खाने का रिकॉर्ड

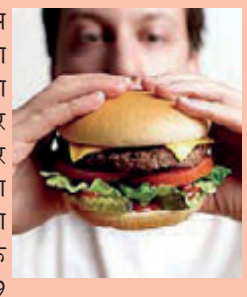

डॉन गोर्सके के पास बिग मैक बर्गर खाने का विश्व रिकॉर्ड है। अमरीका में जेल के एक रिटायर संतरी ने 25,000 बर्गर (बिग मैक) खाए हैं। बिग मैक बहुत बड़े साइज का बर्गर होता है। डॉन गोर्सके ने पहला बर्गर ठीक 39 साल पहले खाया था। उनका कहना है कि वह मरते दम तक बिग मैक बर्गर खाते रहेंगे।

इंद्रधनुष के रंग

सूरज जब क्षितिज से 40 डिग्री से कम का कोण बनाता है, तभी इंद्रधनुष निकलते हैं। आपके पास खड़े व्यक्ति को आपसे थोड़े भिन्न एंगल से रोशनी आती हुई दिखाई देगी। इसलिए आपको एक भिन्न इंद्रधनुष दिखाई देगा।

96 लाख की परफ्यूम की शीशी

क्लाइव क्रिश्चियन का इंपीरियल मैजेस्टी दुनिया का सबसे महंगा परफ्यूम है। इसकी एक बोतल की कीमत लगभग 96 लाख रुपए है। एक ब्रिटिश डिजाइनर ने यह परफ्यूम तैयार किया था।

चांद पर सोना-चांदी

धरती के एकमात्र उपग्रह चंद्रमा पर जल होने की घोषणा के बाद अब नासा के वैज्ञानिकों का कहना है कि चंद्रमा पर उपयोगी पदार्थों का अप्रत्याशित बेशकीमती खजाना मौजूद है जिसमें चांदी और सोना भी शामिल है।

बिना ड्राइवर के कार

सन् 2050 तक हो सकता है आप सड़कों पर बिना ड्राइवर वाल कार चलती देखें। वैज्ञानिकों का कहना है, तब कार चलाने के लिए स्टीयरिंग पर हाथ और ब्रेक पर पैर रखना कानूनन अपराध माना जाएगा।